सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास
b. भाषायी कौशलों का महत्व
c. भाषा के कौशल
d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल
b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
c. लेखन कौशल का महत्व
d. लेखन शिक्षण का समय
e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
g. शुद्ध लेखन तत्व

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

भाषायिक कौशलों का शिक्षण

भाषायी कौशलों का विकास

वास्तव में शिक्षा का एक भाग—भाषा शिक्षण भी है। शिक्षण शब्द का अर्थ है—शिक्षा देना यानी ज्ञान प्रदान करना अर्थात् कुशलता उत्पन्न करना। भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है—शिक्षार्थी (अध्येता-छात्र) को भाषा-व्यवहार में कुशल बनाना, प्रवीण करना, भाषा व्यवहार की यही कुशलता या प्रवीणता भाषा के विभिन्न कौशलों, यथा—श्रवण-भाषण, पठन-वाचन तथा लिखना सामूहिक विकास का निर्भर है। भाषा पर अधिकार करने का अर्थ है—जीवन के विभिन्न व्यवहार-क्षेत्रों में उस भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर सकना।

शिक्षक को विद्यार्थियों के बौद्धिक और मानसिक विकास के अनुसार भाषा शिक्षण का कार्यक्रम रखना चाहिए। भाषा सीखने का स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक क्रम है—सुनना-बोलना-पढ़ना-लिखना। बालक के अन्दर भाषा सीखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है अतः उसे भाषा स्वाभाविक विधि से ही सिखाई जानी चाहिये। बालक छः माह की अवस्था से बोलना प्रारम्भ कर देता है। वयस्कों को बोलते देखकर तथा उनके सम्पर्क में आने के कारण और अनुकरण के कारण बालक भाषा बोलना सीख जाता है, सम्पर्क और अनुकरण के पश्चात् बार-बार अभ्यास करने से उन्हीं शब्दों की आवृत्ति मात्र से वह बोलना सीखता है। यदि हम बालक के मानसिक विकास का सूक्ष्म निरीक्षण करें तो विदित होता है कि भाषा सीखने का भी क्रम होता है। मानसिक विकास के साथ-साथ भाषा सीखने की शक्ति भी बढ़ जाती है। अतः शिक्षक को मानसिक विकास के साथ स्तरानुकूल भाषा ज्ञान के स्तर का क्रम भी ध्यान में रखना चाहिये। भाषा शिक्षण के दो मनोविज्ञान हैं—एक भौतिक और दूसरा मानसिक।

भाषा कौशल एक या दो क्षमताओं तक ही सीमित नहीं है वरन् इसमें चारों क्षमताओं को सम्मिलित करते हैं। ये हैं—श्रवण कौशल शिक्षण, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण, पठन या वाचन कौशल शिक्षण और लिखित कौशल शिक्षण। इन चारों क्षमताओं का प्रवीणता स्तर बढ़ता जायेगा तो विद्यार्थी भाषा पर पूर्ण अधिकार या पूर्ण लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

Scanned with CamScanner